

1.ध्वनि

कवि:- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ

1. मृदुल :- कोमल
2. पात :- पत्ता
3. गात :- शरीर
4. निंद्रित :- सोया हुआ
5. प्रत्यूष :- प्रातः काल
6. तंद्रालस :- नींद से अलसाया हुआ
7. लालसा :- कुछ पाने की चाह , अभिलाषा

प्रश्नोत्तर

1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?

उत्तर :- कवि को ऐसा विश्वास है क्योंकि अभी उनके मन में नया जोश व उमंग है। अभी उन्हें काफ़ी नवीन कार्य करने हैं। वे युवा पीढ़ी को आलस्य की दशा से उबारना चाहते हैं। उन्हें युवकों को उत्साहित करने जैसे अनेक कार्य करने हैं तथा स्वयं की रचनाओं तथा कार्यों की खुशबू चारों ओर बिखेरनी है।

2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है ?

उत्तर :- फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकाल कर खिले फूल बनाना चाहता है। कवि का मानना है कि उसके जीवन में वसंत आया हुआ है। इसलिए वह कलियों को हाथों के स्पर्श से खिला देंगे। वे फूलों की आँखों से आलस्य हटाकर उन्हें चुस्त व जागरूक करना चाहते हैं।

3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहते हैं ?

उत्तर :- कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए उन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना चाहते हैं। वे उनको चुस्त, प्राणवान, आभावान व पुष्पित करना चाहते हैं। अतः कवि नींद में पड़े युवकों को प्रेरित करके उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगा देंगे, उनका आलस्य दूर भगा देंगे तथा उनमें नये उत्साह का संचार करना चाहते हैं।

4. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है ?

उत्तर :- वसंत को ऋतुराज कहा जाता है क्योंकि यह सभी ऋतुओं का राजा है । इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है । मौसम सुहावना हो जाता है । इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं । पंचतत्व अर्थात् जल , वायु , धरती , आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं । पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं । आम बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं । सरसों के पीले फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं । खेतों में फूली हुई सरसों , पवन के झोंकों से हिलती , ऐसी दिखाई देती है , मानो सामने सोने का सागर लहरा रहा हो । कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू-कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है । इस ऋतु में प्रकृति की छटा देखते ही बनती है ।

5. वसंत ऋतु में कौन - कौन से त्यौहार मनाए जाते हैं ?

उत्तर :- इस ऋतु में कई प्रमुख त्यौहार मनाए जाते हैं , जैसे - वसंत पंचमी , महा शिवरात्रि , होली आदि ।

6. 'ध्वनि' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर :- 'ध्वनि' कविता मानव को जीवन जीने की प्रेरणा देती है । इसके साथ - साथ इस कविता से हमें विपरीत व निराशाजनक परिस्थितियों में भी जीवन से हार न मानने तथा जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण बनाये रखने का सन्देश मिलता है । कवि अपने जीवन तथा संसार में नवजीवन का संचार करने का कार्य संकल्प के रूप में लेते हैं । उनका मानना है कि अभी तो उसके जीवन में वसंत आया है । अभी उन्हें बहुत कुछ करना है । उन्हें युवा वर्ग को रचनात्मक कार्य करने हेतु उत्साहित करना है ।

7. 'ध्वनि' कविता हमें क्या संदेश देती है ?

उत्तर :- 'ध्वनि' कविता यह संदेश देती है कि जिस प्रकार वसंत ऋतु में चारों ओर फूल खिलकर अपना सौंदर्य बिखेरते हैं और प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं ; उसी प्रकार हमें भी अच्छे कार्य करते हुए समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देना चाहिए ।

2. लाख की चूड़ियाँ

लेखक :- कामतानाथ

शब्दार्थ

1. सलाख :- सलाई, धातु की छड़
2. मुंगरी :- गोल , मुठियादार लकड़ी जो ठोकने - पीटने के काम आती है ।
3. पैतृक :- पूर्वजों का , पिता से प्राप्त या पुश्तैनी
4. विनिमय :- अदल - बदल , वस्तुओं की अदल - बदल
5. कसर :- घाटा पूरा करना
6. मुखातिब :- देखकर बात करना
7. डलिया :- बाँस का बना एक छोटा पात्र

प्रश्नोत्तर :-

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था ?

उत्तर :- बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से जाता था क्योंकि लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहता था। लेखक को बदलू काका से अत्यधिक लगाव था। वह लेखक को ढेर सारी लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देता था इसलिए लेखक अपने मामा के गाँव चाव से जाता था। गाँव के सभी लोग बदलू को 'बदलू काका' कहकर बुलाते थे इस कारण लेखक भी 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' कहता था ।

2. वस्तु-विनिमय क्या है ? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है ?

उत्तर :- 'वस्तु-विनिमय' में एक वस्तु को दूसरी वस्तु देकर लिया जाता था । वस्तु के लिए पैसे नहीं लिए जाते थे । वस्तु के बदले वस्तु ली - दी जाती थी । किन्तु अब मुद्रा के चलन के कारण वर्तमान परिवेश में वस्तु का लेन-देन मुद्रा के द्वारा होता है । विनिमय की प्रचलित पद्धति पैसा है ।

3. 'मशीनी युग' ने कितने हाथ काट दिए हैं । - इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है ?

उत्तर :- इस पंक्ति में लेखक ने कारीगरों की व्यथा की ओर संकेत किया है कि मशीनों के आगमन के साथ कारीगरों के हाथ से काम-धंधा छिन गया । मानो उनके हाथ ही कट गए हों । उन कारीगरों का रोजगार इन पैतृक काम धन्धों से ही चलता था । उसके अलावा उन्होंने कभी कुछ नहीं सीखा था। वे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इस कला को बढ़ाते चले आ रहे हैं और साथ में रोज़ी रोटी भी चला रहें हैं । परन्तु मशीनी युग ने उनकी रोज़ी रोटी पर वार किया है । मशीनों ने लोगों को बेरोजगार बना दिया ।

4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी, जो लेखक से छिपी न रह सकी ?

उत्तर :- बदलू लाख की चूड़ियाँ बेचा करता था परन्तु जैसे-जैसे काँच की चूड़ियों का प्रचलन बढ़ता गया , उसका व्यवसाय ठप पड़ने लगा । अपने व्यवसाय की यह दुर्दशा बदलू को मन ही मन कचोटती थी । बदलू के मन में इस बात की व्यथा थी कि मशीनी युग के प्रभाव स्वरूप उस जैसे अनेक कारीगरों को बेरोजगारी और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है । अब लोग कारीगरी की कद्र न करके दिखावटी चमक पर अधिक ध्यान देते हैं । यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी ।

5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

उत्तर :- मशीनी युग से बदलू के जीवन में यह बदलाव आया कि बदलू का व्यवसाय बंद हो गया । वह बेरोजगार हो गया । काम न करने से उसका शरीर भी ढल गया, उसके हाथों - माथे पर नसें उभर आईं । अब वह बीमार रहने लगा ।

6. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन-किन राज्यों में होता है ? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या-क्या चीज़ें बनती हैं ?

उत्तर :- लाख की वस्तुओं का निर्माण सर्वाधिक उत्तरप्रदेश , राजस्थान, कर्नाटक आदि राज्यों में होता है । लाख से चूड़ियाँ, मूर्तियाँ, गोलियाँ, आभूषण तथा सजावट की वस्तुओं का निर्माण होता है ।

3 . बस की यात्रा

लेखक :- हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ :-

- 1) निमित्त :- कारण
- 2) गोता :- डुबकी लगाना
- 3) इत्तफाक :- संयोग
- 4) बियाबान :- जंगल , उजाड़खंड
- 5) अंत्येष्टि :- मृतक कर्म
- 6) प्रयाण :- प्रस्थान

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. “मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।” लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जाग गई ?

उत्तर :- लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह टायर की स्थिति से परिचित होने के बावजूद भी बस को चलाने का साहस जुटा रहा था । कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था । अर्थ मोह की वजह से आत्म बलिदान की ऐसी भावना दुर्लभ थी , जिसे देखकर लेखक हतप्रभ हो गया और उसके प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उमड़ती है ।

प्रश्न 2. “लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते ।” लोगों ने यह सलाह क्यों दी ?

उत्तर :- लोगों ने लेखक को यह सलाह दी क्योंकि वे जानते थे की बस की हालत बहुत खराब है । बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रुक जाए, शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता । उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है ।

प्रश्न 3. “ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।” लेखक को ऐसा क्यों लगा ?

उत्तर :- जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जों की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

प्रश्न 4. “गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।” लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई ?

उत्तर :- बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

प्रश्न 5. “मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।” लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था ?

उत्तर :- बस की जर्जर अवस्था से लेखक को ऐसा महसूस हो रहा था कि बस की स्टीयरिंग कहीं भी टूट सकती है तथा ब्रेक फेल हो सकता है। ऐसे में लेखक को डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

प्रश्न 6. ‘सविनय अवज्ञा आंदोलन’ किस के नेतृत्व में, किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था ?

उत्तर :- ‘सविनय अवज्ञा आंदोलन’ महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 1930 में अंग्रेज़ी सरकार से असहयोग करने तथा पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए किया गया था।

प्रश्न 7. लेखक और उसके मित्र कितने बजे की बस पकड़ना चाहते थे और क्यों ?

उत्तर :- लेखक और उसके मित्र शाम चार बजे की बस पकड़ना चाहते थे। इस बस से वे पन्ना, फिर सतना और वहाँ से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़कर सुबह तक घर पहुँचना चाहते थे।

अनुच्छेद लेखन

1 . भारत के राष्ट्रीय पर्व

संकेत बिंदु :- प्रस्तावना , पर्वों का उद्देश्य , मुख्य पर्व , मनाने का औचित्य , उपसंहार |

अभ्यास हेतु

2 . परोपकार

संकेत बिंदु :- प्रस्तावना , परोपकार का अर्थ , मनुष्य होने का अर्थ , विभिन्न उदाहरण , उपसंहार |

3 . कम्प्यूटर का युग

संकेत बिंदु :- भूमिका , महत्वपूर्ण उपकरण , कम्प्यूटर कल्पवृक्ष की भांति , विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग , उपसंहार |

विराम चिन्ह

परिभाषा :- भाषा में वाक्यों , उपवाक्यों और शब्दों पर जहाँ जितना विराम अपेक्षित हो , उसे सूचित करने वाले चिन्ह विराम चिन्ह कहलाते हैं ।

हिंदी में मुख्यतः बारह विराम - चिन्हों का प्रयोग किया जाता है :-

1) **पूर्णविराम चिन्ह [|]**

उदाहरण :- (i) महेश खाना खा रहा है ।

(ii) पिता जी दफ्तर जा रहे हैं ।

2) **अल्पविराम चिन्ह [,]**

उदाहरण :- (i) पीले , लाल , गुलाबी और नीले फूल बाग की शोभा बढ़ा रहे हैं ।

(ii) तुम बैठो , मैं अभी आई ।

3) **अर्धविराम चिन्ह [;]**

उदाहरण :- (i) कविता ने बहुत प्रयत्न किए ; परन्तु सफल न हो सकी ।

(ii) खनिज पदार्थों में लोहा मुख्य है ; पर वहाँ सीसा और जस्ता भी मिलता है ।

4) **प्रश्नवाचक चिन्ह [?]**

उदाहरण :- (i) तुम क्या कर रहे हो ?

(ii) रवि , तुम कब आ रहे हो ?

5) **विस्मयवाचक चिन्ह [!]**

उदाहरण :- (i) छिः ! इतनी गंदगी पहले कभी नहीं देखी ।

(ii) हे ईश्वर ! यह क्या हुआ ?

6) **योजक या विभाजक [-]**

उदाहरण :- (i) कभी - कभी , दूर - दूर

(ii) माता - पिता , छोटा - बड़ा

7) **निर्देशक चिन्ह [----]**

उदाहरण :- (i) हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं - 15 अगस्त , 26 जनवरी व 2 अक्टूबर ।

(ii) 'तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा ।'--- सुभाष चंद्र बोस ।

8) **उद्धरण - चिन्ह [' '] [" "]**

उदाहरण :- (i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

- (ii) तुलसीदास जी ने कहा , “रघुकुल रीति सदा चली आई | प्राण जाए पर वचन न जाए |”
- 9) **विवरण - चिन्ह [:-]**
 उदाहरण :- (i) निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़िए :-
 (ii) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार होते हैं :-
- 10) **कोष्ठक चिन्ह [] ()**
 उदाहरण :- (i) निरंतर (लगातार) अध्ययन से ही अच्छे अंक प्राप्त होते हैं |
 (ii) कैकेयी - (क्रुद्ध होकर) मुझे यह फैसला मंजूर नहीं |
- 11) **लाघव या संक्षेपसूचक चिन्ह [°]**
 उदाहरण :- (i) पं . - पंडित
 (ii) डॉ . - डॉक्टर
- 12) **हंसपद या त्रुटिपूरक चिन्ह [^]**
 उदाहरण :- (i) राम ने रावण ^ वध किया |
 (ii) कोई तुम्हें बुला ^ है |

अभ्यास कार्य

प्रश्न - 1 नोटबुक में करवाया जाएगा एवं प्रश्न - 3 पुस्तक में ही करवाया जाएगा |

उपसर्ग

परिभाषा :- जो शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं , वे उपसर्ग कहलाते हैं |

उपसर्ग के भेद

हिंदी भाषा में मुख्यतः चार प्रकार के उपसर्ग प्रयोग में लाए जाते हैं ----

- 1) संस्कृत के उपसर्ग
- 2) संस्कृत के अव्यय
- 3) हिंदी के उपसर्ग
- 4) उर्दू व अरबी - फ़ारसी के उपसर्ग

1) संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग

अनु

अर्थ

पीछे , समान

शब्द

अनुचर , अनुक्रम , अनुभव

अधि	श्रेष्ठ , ऊपर	अधिकार , अधिपति , अध्याय
उप	निकट , सदृश	उपदेश , उपकार , उपवन
परि	आसपास , चारों ओर	परिक्रमा , परिवार , परिचय
वि	विशेष , भिन्न	विज्ञान , विवाद , विजय

2) संस्कृत के अव्यय

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
कु	बुरा	कुपात्र , कुकर्म , कुरूप
चिर	बहुत , देर	चिरकाल , चिरायु , चिरस्थायी
सह	साथ	सहकारी , सहयोग , सहोदर
पुनर	पुनः , फिर	पुनर्जन्म , पुनरागमन , पुनर्विवाह
स्वयं	अपने-आप , खुद	स्वयंसेवक , स्वयंवर , स्वयंसिद्ध

3) हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अन	विशेष , निषेध	अनमोल , अनबन , अनपढ़
नि	रहित , नहीं	निहत्था , निडर , निकम्मा
बिन	निषेध	बिनखाया , बिनदेखा , बिनकाम
दु	दो	दुगुना , दुमंजिला , दुबारा
स	अच्छा	सजग , सफल , सपूत

4) उर्दू व अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
खुश	अच्छा , प्रसन्न	खुशबू , खुशदिल , खुशकिस्मत
बा	सहित	बाअदब , बाकायदा , बाइज्जत
ला	बिना	लापरवाह , लाजवाब , लाइलाज
हम	समान	हमशक्ल , हमसफ़र , हमउम्र
सर	मुख्य	सरकार , सरताज , सरपंच

अभ्यास कार्य

व्याकरण पाठ्य पुस्तक से प्रश्न - 2,3,4 को नोटबुक में करवाया जाएगा ।

औपचारिक पत्र

1) रेल - यात्रा के दौरान चोरी की शिकायत करते हुए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए ।

अभ्यास हेतु

- 2) स्वास्थ्य अधिकारी को मोहल्ले की सफाई का उचित प्रबंध करने हेतु पत्र लिखिए ।
- 3) अपने शहर में बढ़ते ध्वनि प्रदूषण की ओर ध्यानाकर्षित कराते हुए दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए ।

भारत की खोज 1. अहमदनगर का किला

प्रश्न 1. नेहरु जी अपनी विरासत किसे मानते हैं ?

उत्तर - नेहरु जी उन सबको अपनी विरासत मानते हैं जिसे मानवता ने सदियों , हजारों सालों के दौरान हासिल किया । इसमें विजयों का उल्लास , पराजय की दुखद यंत्रणा तथा मनुष्य के हैरत अंगेज कारनामों भी हैं ।

प्रश्न 2. अहमदनगर किले में नेहरुजी अपना शौक पूरा करने के लिए क्या काम करने लगे?

उत्तर - अहमदनगर किले में नेहरुजी ने अपनी बागवानी का शौक पूरा करने के लिए कुदाल उठा ली और बागवानी के काम के लिए 'पथरीली एवं कंकरीली जमीन की खुदाई शुरू कर दी।' उन्होंने अपने अथक परिश्रम तथा लगन से उस अनुपजाऊ जमीन को पेड़ - पौधे लगाने के योग्य बना दिया ।

प्रश्न 3. इतिहास लेखन के बारे में इतिहासकार गेटे का क्या कहना है ?

उत्तर - इतिहास लेखन के बारे में इतिहासकार गेटे का कहना था कि इतिहास लेखन अतीत के भारी बोझ से एक सीमा तक राहत दिलाता है ।

प्रश्न 4. चाँद बीबी कौन थी ? उनसे सम्बंधित कौन-सी घटना याद की जाती है ?

उत्तर - चाँद बीबी अहमदनगर किले में रहने वाली महिला तथा शासिका थी । उसने किले की रक्षा के लिए अकबर की शाही सेना के विरुद्ध अत्यंत साहसपूर्वक युद्ध किया और अपनी सेना का नेतृत्व करती रही । अंत में उसकी हत्या उसके अपने ही एक आदमी ने कर दी ।

2. तलाश

प्रश्न 1. सिंधु घाटी सभ्यता किस स्थान से सम्बंधित है ?

उत्तर - सिंधु घाटी सभ्यता भारत के पश्चिमोत्तर दिशा में सिंधु घाटी में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर है | यह सभ्यता यहाँ चारों ओर बिखरी थी , जिसका समय चार - पांच हजार वर्ष पहले का बताया जाता है |

प्रश्न 2. हिमालय के हृदय से कौन-कौन सी नदियाँ निकलती हैं ? सिंधु नदी की विशेषता पाठ के आधार पर लिखिए |

उत्तर - हिमालय पर्वत के हृदय से गंगा , यमुना , ब्रह्मपुत्र तथा सिंधु जैसी अनेक नदियाँ निकलती हैं | सिंधु हिमालय से निकलने वाली प्रमुख नदी है | इसे इंडस भी कहा जाता है | इसी के आधार पर भारत का नाम 'इंडिया' या 'हिन्दुस्तान' पड़ा |

प्रश्न 3. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर - भारत की शक्ति और सीमा नामक इस पाठांश से भारतीय संस्कृति के बारे में पता चलता है कि भारतीय संस्कृति अत्यंत पुरानी है | उसमें समय - समय पर कुछ बदलाव अवश्य हुए हैं , पर उसका स्वरूप नष्ट नहीं हुआ | यह पुराने विचारों के साथ - साथ नए विचार आत्मसात करने में सक्षम है |

प्रश्न 4. तक्षशिला की प्रसिद्धि का कारण पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - तक्षशिला एक महान विश्वविद्यालय तथा भारतीय संस्कृति का केंद्र था जो दो हजार वर्ष पहले प्रसिद्धि के चरम शिखर पर था | यहाँ भारत भर के ही नहीं बल्कि एशिया के विद्यार्थी ज्ञानार्जन हेतु आते थे |

.....

व्याकरण

वाक्य विचार [अर्थ के आधार पर]

वाक्य :- शब्दों का वह सार्थक समूह , जिससे किसी भाव / विचार को पूर्णतः प्रकट किया जा सके , वाक्य कहलाता है ।

वाक्य के प्रकार

वाक्य के दो आधारों पर भेद किए जा सकते हैं :-

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य को आठ भागों में बाँटा जा सकता है :-

- (i) विधानार्थक वाक्य
- (ii) निषेधार्थक वाक्य
- (iii) इच्छार्थक वाक्य
- (iv) प्रश्नार्थक वाक्य
- (v) आज्ञार्थक वाक्य
- (vi) संकेतार्थक वाक्य
- (vii) संदेहार्थक वाक्य
- (viii) विस्मयादिबोधक वाक्य

विधानार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों से क्रिया के करने या होने का सामान्य रूप से बोध हो , वे विधानार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) घोड़ा दौड़ता है ।

2) किसान हल चलाता है ।

निषेधार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों में कार्य के न होने का बोध होता है , वे निषेधार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) मैं आज खाना नहीं खाऊंगा ।

2) सविता करिश्मा को नहीं जानती है ।

इच्छार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों में वक्ता की इच्छा , कामना , आशीर्वाद आदि का बोध होता है , वे इच्छार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) काश रवि भी हमारे साथ होता ।

2) भगवान तुम्हारा भला करे ।

प्रश्नार्थक वाक्य :- जो वाक्य प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए जाते हैं अर्थात जिन वाक्यों में वक्ता कोई प्रश्न पूछता है , वे प्रश्नार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) क्या तुम कल मेरे घर आओगे ?

2) दरवाजे पर कौन खड़ा है ?

आज्ञार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों में आज्ञा , आदेश , प्रार्थना , अनुमति आदि के भाव प्रकट किए जाते हैं , वे आज्ञार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) तुम अब कहीं नहीं जाओगे ।

2) जाओ , जाकर सो जाओ ।

संकेतार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों में किसी शर्त की ओर संकेत किया गया हो या जिसमें एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर करती हो , वे संकेतार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) यदि वर्षा होगी , तो खेती अच्छी होगी ।

2) यदि दवा लगे , तो जल्दी अच्छे हो जाओगे ।

संदेहार्थक वाक्य :- जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह का बोध होता है , वे संदेहार्थक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) शायद वह खाना खा चुका होगा ।

2) शायद मैं पढ़ने बैठ जाऊँ ।

विस्मयादिबोधक वाक्य :- जिन वाक्यों से शोक , घृणा , हर्ष आदि के भाव प्रकट हों , वे विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाते हैं ।

उदाहरण :- 1) अरे ! तुम ये क्या कर रहे हो ?

2) वाह ! कितना सुंदर दृश्य है ।

अभ्यास कार्य

प्रश्न - 3 नोटबुक में करवाया जाएगा । (पृष्ठ संख्या 178)

.....
.....

संधि

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार होता है , उसे संधि कहते हैं ।

संधि के प्रकार

संधि तीन प्रकार की होती हैं -

- (i) स्वर संधि
- (ii) व्यंजन संधि
- (iii) विसर्ग संधि

स्वर संधि :- दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं ।

स्वर संधि पांच प्रकार की होती हैं :-

- 1) दीर्घ संधि
- 2) गुण संधि
- 3) वृद्धि संधि
- 4) यण संधि
- 5) अयादि संधि

दीर्घ संधि

देव + अर्चन = देवार्चन

शिव + आलय = शिवालय

गिरि + इंद्र = गिरीन्द्र

गुरु + उपदेश = गुरूपदेश

भू + ऊर्जा = भूर्जा

गुण संधि

देव + इंद्र = देवेन्द्र

महा + ईश्वर = महेश्वर

सूर्य + उदय = सूर्योदय

पर + उपकार = परोपकार

राजा + ऋषि = राजर्षि

वृद्धि संधि

एक + एक = एकैक

सदा + एव = सदैव

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्या

परम + ओजस्वी = परमौजस्वी

वन + औषध = वनौषध

यण संधि

अति + अधिक = अत्यधिक

वि + आप्त = व्याप्त

सु + अच्छ = स्वच्छ

अनु + एषण = अन्वेषण

पितृ + आलय = पित्रालय

अयादि संधि

चे + अन = चयन

गै + इका = गायिका

पो + इत्र = पवित्र

नौ + इक = नाविक

पौ + अक = पावक

2 . **व्यंजन संधि** :- व्यंजन के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से उस व्यंजन में जो परिवर्तन होता है , वह व्यंजन संधि कहलाता है ।

उदाहरण :- दिक् + विजय = दिग्विजय

उत् + गम = उदगम

तत् + भव = तदभव

सत् + आचार = सदाचार

जगत् + अंबा = जगदंबा

3 . **विसर्ग संधि** :- विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग के स्थान पर जो विकार होता है , उसे विसर्ग संधि कहते हैं ।

उदाहरण :- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

निः + अर्थक = निर्थक

दुः + चक्र = दुश्चक्र

अंतः + करण = अंतःकरण

यशः + स्वी = यशस्वी

अभ्यास कार्य

प्रश्न - 2 , 3 नोटबुक में करवाया जाएगा ।

.....
.....

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- पृष्ठ संख्या 229

बचपन में बालक अबोध होता है । उसेग्रन्थ की रचना कर सके ।

.....
.....

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

परिभाषा :- कुछ शब्द मिलता - जुलता उच्चारण होने के कारण समान लगते हैं, किन्तु वे भिन्न अर्थ रखते हैं | ऐसे शब्दों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं |

पृष्ठ 51 , 52 से 1 , 5 , 7, 10, 15 , 17, 22, 24 , 26, 29 , 32 , 34 , 36 , 38 , 41 , 43 , 46 , 48 , 53 , 58

क्र. सं	समरूपी शब्द	अर्थ
1.	अंक	गोद
	अंग	शरीर
2.	अनल	आग
	अनिल	हवा
3.	अपचार	अनुचित कर्म
	उपचार	इलाज
4.	अभिराम	सुंदर
	अविराम	लगातार
5.	उग्र	तेज
	अग्र	आगे
6.	कंकाल	हड्डियों का ढांचा
	कंगाल	दरिद्र
7.	कोश	शब्दों का भंडार
	कोष	खजाना
8.	गज	हाथी
	गाज	बिजली
9.	गृह	घर
	ग्रह	नक्षत्र
10.	चिर	पुराना
	चीर	वस्त्र
11.	ज्वर	बुखार
	ज्वार	उफान
12.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
13.	धन	रुपया-पैसा
	धान	चावल का पौधा

14.	नीर	जल
	नीड़	घोंसला
15.	पानी	जल
	पाणि	हाथ
16.	प्रतिमा	मूर्ति
	प्रतिभा	बुद्धि
17.	बान	आदत
	बाण	तीर
18.	भारती	सरस्वती
	भारतीय	भारत का निवासी
19.	रंक	दरिद्र
	रंग	वर्ण
20.	शस्त्र	हथियार
	शास्त्र	धार्मिक ग्रंथ

चित्र वर्णन

व्याकरण पुस्तक से पृष्ठ 232 चित्र वर्णन के लिए लिया जाएगा ।

.....

4 . दीवानों की हस्ती

कवि :- भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ

- 1) हस्ती :- अस्तित्व
- 2) आलम :- दुनिया
- 3) स्वच्छंद :- अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाले
- 4) छककर :- जी भरकर
- 5) उर :- हृदय

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'दीवानों की हस्ती' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।

उत्तर :- दीवानों की हस्ती कविता का प्रतिपाद्य यह है कि हमें सुख - दुख को एक समान भाव से अपनाना चाहिए । हमें मस्ती भरा जीवन जीना चाहिए । वास्तव में जीवन की सच्ची

झलक इसी मनमौजी जीवन में मिलती है | हमारे मन में 'स्व' की भावना कम-से-कम 'पर' की भावना प्रगाढ़ होनी चाहिए | अपने तथा पराए की भावना से ऊपर उठकर हमें सभी के कल्याण की कामना करनी चाहिए |

प्रश्न 2. 'दीवानों की हस्ती' कविता में 'दीवाने' किन्हें कहा गया है ?

उत्तर :- दीवानों की हस्ती कविता में 'दीवाने' उन्हें कहा गया है जो बेफिक्री का जीवन जीते हैं , लोगों के बीच मस्ती से जीवन जीने का संदेश देते हुए देश के लिए सब कुछ अर्पण कर देना चाहते हैं |

प्रश्न 3. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है ?

उत्तर :- कवि ने अपने आने को उल्लास कहता है क्योंकि जहाँ भी वह जाता है मस्ती का आलम लेकर जाता है। वहाँ लोगों के मन प्रसन्न हो जाते हैं | पर जब वह उस स्थान को छोड़ कर आगे जाता है तब उसे तथा वहाँ के लोगों को दुःख होता है | विदाई के क्षणों में उसकी आँखों से आँसू बह निकलते हैं |

प्रश्न 4. कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी ?

उत्तर :- कविता में कवि का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा लगा | कवि कहते हैं कि हम सबके सुख-दुःख एक है तथा हमें एक साथ ही इन सुखों और दुखों को भोगना पड़ता है | हमें दोनों परिस्थितियों का सामना समान भाव से करना चाहिए | ऐसा दृष्टिकोण रखनेवाला व्यक्ति ही सुखी रह सकता है |

प्रश्न 5. जीवन में मस्ती होनी चाहिए , लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है ?

उत्तर :- मनुष्य को सारी चिंता - फिक्र छोड़कर मस्ती भरा जीवन जीना चाहिए किन्तु हमारे द्वारा की गई मस्ती से किसी का अहित होने लगे या उसकी भावनाएँ आहत होने लगे तो वह मस्ती हानिकारक हो सकती है | हमें दूसरों के जीवन या स्वतंत्रता में दखल देने का कोई हक नहीं है | ऐसा न हो हम अपनी मस्ती में इतना मस्त हो जाएँ कि दूसरों की भावनाओं का ख्याल ही न रह पाए |

प्रश्न 6. 'आबाद रहे रहनेवाले' का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- दीवाने स्वयं तो एक जगह टिककर नहीं रुकते हैं , एक जगह रुकने से उनके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती है किन्तु देशवासियों के लिए वे हँसी-खुशी से जीवन बिताने की कामना करते हैं |

प्रश्न 7. 'दीवानों की हस्ती' कविता में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- 'दीवानों की हस्ती' कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि हमें मनमौजी तथा बेफिक्री का जीवन जीना चाहिए । लोगों के दुख को अपना दुख समझना चाहिए तथा उनमें खुशियाँ बाँटनी चाहिए । हमें देशवासियों के लिए कल्याण की भावना रखनी चाहिए । इसके आलावा दीवानों की तरह ही हमारे मन में देश के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने की भावना होनी चाहिए ।

विज्ञापन लेखन

वृक्षारोपण का संदेश देनेवाला एक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

संवाद लेखन

- 1) दो पड़ोसियों के बीच कालोनी में बढ़ती गंदगी को लेकर फ़ोन पर हुआ संवाद लिखिए ।

अभ्यास हेतु

- 2) भारत और पाकिस्तान के बीच हुए क्रिकेट मैच पर दो मित्रों के बीच बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए ।

6. भगवान के डाकिए

कवि :- रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

- 1) बाँचना :- पढ़ना , सस्वर पढ़ना
- 2) आँकना :- अनुमान करना
- 3) पांख :- पंख , पर
- 4) सौरभ :- सुगंध

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं , उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं । उनके लिए संदेश को हम भले ही न समझ पाए , पर पेड़ , पौधे , पानी और पहाड़ उसे भली प्रकार पढ़-समझ लेते हैं । जिस तरह बादल और पक्षी दूसरे देश में जाकर भी भेदभाव नहीं करते उसी तरह हमें भी आचरण करना चाहिए ।

प्रश्न 2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं ?

उत्तर :- पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियों को पेड़-पौधे , पानी और पहाड़ पढ़ पाते हैं ।

प्रश्न 4. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे , पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं ?

उत्तर :- कवि का कहना है कि पक्षी और बादल भगवान के डाकिए हैं । जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं , उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश लाने का काम करते हैं । पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे , पानी और पहाड़ भगवान के भेजे एकता और सद्भावना के संदेश को पढ़ पाते हैं । इस पर अमल करते नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती है । पहाड़ भी समान रूप से सबके साथ खड़ा होता है । पेड़-पौधे समान भाव से अपने फल , फूल व सुगंध को बाँटते हैं , कभी भेदभाव नहीं करते ।

प्रश्न 5. “एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है” - कथन का भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- एक देश की धरती अपने सुगंध व प्यार को पक्षियों के माध्यम से दूसरे देश को भेजकर सद्भावना का संदेश भेजती है । धरती अपनी भूमि में उगने वाले फूलों की सुगंध को हवा से , पानी को बादलों के रूप में भेजती है । हवा में उड़ते हुए पक्षियों के पंखों पर प्रेम-प्यार की सुगंध तैरकर दूसरे देश तक पहुँच जाती है । इस प्रकार एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है ।

प्रश्न 6. पक्षियों और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं ?

उत्तर :- पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को हम प्रेम , सौहार्द और आपसी सद्भाव की दृष्टि से देख सकते हैं । यह हमें यही संदेश देते हैं ।

प्रश्न 7. ‘भगवान के डाकिए’ कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- ‘भगवान के डाकिए’ कविता में प्रकृति तथा उसके उपादानों द्वारा किए गए निस्वार्थ क्रिया-कलापों द्वारा मनुष्य को विश्वबंधुत्व की भावना मजबूत करने का संदेश दिया गया है । कविता में बताया गया है कि जिस प्रकार प्रकृति अपने खजाने को अपने-पराए का भेदभाव किए बिना सब पर लुटाती है उसी प्रकार जाति , धर्म , संप्रदाय , क्षेत्रीयता , भाई-भतीजावाद आदि की भावना से ऊपर उठकर हमें कार्य करना चाहिए जिससे प्रेम , सद्भाव तथा एकता की भावना मजबूत हो ।

7. क्या निराशा हुआ जाए

लेखक :- हजारी प्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ

- 1) धर्मभीरु :- जिसे धर्म छूटने का भय हो
- 2) पर्दाफ़ाश :- भेद खोलना
- 3) उजागर :- प्रकट करना
- 4) गंतव्य :- स्थान जहाँ किसी को जाना हो
- 5) ढाँढस :- दिलासा

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं हैं । आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है ?

उत्तर :- लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा है कि उसने धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है । पर उसका मानना है कि अगर वो इन धोखों को याद रखेगा तो उसके लिए विश्वास करना बेहद कष्टकारी होगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है , निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है ।

टिकट बाबू द्वारा बचे हुए पैसे लेखक को लौटाना , बस कंडक्टर द्वारा दूसरी बस व बच्चों के लिए दूध लाना आदि ऐसी घटनाएँ हैं । इसलिए उसे विश्वास है कि समाज में मानवता , प्रेम , आपसी सहयोग समाप्त नहीं हो सकते ।

प्रश्न 2. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है ?

उत्तर :- दोषों का पर्दाफ़ाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब हम किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लेते हैं या जब हमारे ऐसा करने से वे लोग उग्र रूप धारण कर किसी को हानि पहुँचाए ।

प्रश्न 3. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं । इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए ?

उत्तर :- इस प्रकार के पर्दाफाश से समाज में व्याप्त बुराईयों से , अपने आस-पास के वातावरण तथा लोगों से अवगत हो जाते हैं और इसके कारण समाज में जागरूकता भी आती है साथ ही समाज समय रहते ही सचेत और सावधान हो जाता है ।

प्रश्न 4. आज समाज में मानवीय मूल्यों की क्या स्थिति है ?

उत्तर :- आज समाज में सच्चाई का पालन करने वाले को मूर्ख समझा जाने लगा है । उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । श्रमजीवी पिस रहे हैं जबकि फ़रेब का व्यापार करने वाले फल-फूल रहे हैं । ऐसे में मानवीय मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था कम होती जा रही है ।

प्रश्न 5. भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोगों का आक्रोश क्या प्रकट करता है ?

उत्तर :- भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोगों में व्याप्त आक्रोश यह प्रकट करता है कि लोग उसे समाज से दूर करना चाहते हैं । वे इसे गलत समझते हैं । गलत तरीके से कमाए गए धन और मान की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं।

प्रश्न 6. टिकट बाबू की किस ईमानदारी से लेखक चकित हो गया ?

उत्तर :- एक बार टिकट लेते समय लेखक को दस रूपए का टिकट लेना था । उसने गलती से सौ रूपए का नोट दे दिया और डिब्बे में जाकर बैठ गया । थोड़ी देर में टिकट बाबू नब्बे रूपए लेकर आया और लेखक को दिए । ऐसा करते समय उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी । उसकी ऐसी ईमानदारी देखकर लेखक चकित रह गए ।

प्रश्न 7. उस घटना का वर्णन कीजिए , जिससे हमें यह पता चलता है कि दूसरों के बारे में बिना सोचे-समझे गलत राय नहीं बना लेनी चाहिए ।

उत्तर :- लेखक जिस बस में यात्रा कर रहा था , वह बस खराब हो गई । बस का कंडक्टर एक साइकिल उठाकर चलता बना । लोगों ने समझा कि यह जरूर ही डाकुओं को बुलाने गया है , लोगों ने बिना सोचे - समझे ड्राइवर को मारने की योजना बना ली पर लेखक के समझाने पर वे मान गए । थोड़ी देर में लोगों ने देखा कि कंडक्टर बस अड्डे से नई बस लेकर आ रहा है । बाद में सभी ने अपनी भूल के लिए ड्राइवर से क्षमा माँगी ।

पर्यायवाची शब्द

परिभाषा :- पर्याय का शाब्दिक अर्थ है - अन्य या दूसरा | वे शब्द जो भिन्न - भिन्न होते हुए भी किसी एक अर्थ को स्पष्ट करे , पर्यायवाची कहलाते हैं | पृष्ठ संख्या 40

1 से 50 प्रथम सत्र

2 , 5 , 11 , 15 , 18 , 22 , 23 , 24 , 25 , 27 , 29 , 32 , 33 , 35 , 39 , 41 , 43 , 45 , 47 , 50 |

1 . अम्बर - आकाश ,गगन ,नभ ,आसमान ,व्योम

2 . अग्नि - आग ,अनल ,पावक ,ज्वाला ,वह्नि

3 . अरण्य -जंगल ,वन ,कानन ,विपिन ,कान्तार

4. आभूषण -भूषण ,गहना ,जेवर ,अलंकार

5 . इच्छा - आकांक्षा ,कामना ,मनोरथ ,चाह ,लालसा

6 . कपडा -वस्त्र ,वसन ,पट ,चीर ,अम्बर

7 . कमल - पंकज ,जलज ,नीरज ,राजीव ,अरविन्द

8 . कृषक - किसान ,खेतिहर ,कृषिजीवी ,हलवाहा

9 . कृष्ण -मोहन ,गोपाल ,केशव ,घनश्याम ,माधव

10. कामदेव -मदन ,कंदर्प ,मनोज ,रतिपति

11. कोयल - कोकिल श्यामा ,कोकिला ,पिक ,वसन्तदूत

12 . गंगा - भागीरथी ,सुरसरि ,मन्दाकिनी ,जाहनवी

13 . गणेश - गजानन ,लम्बोदर ,गणपति ,एकदन्त

14 . गाय - गौ , धेनु ,सुरभि ,गऊ

15 . चतुर - दक्ष ,निपुण ,चालक ,कुशल ,प्रवीण

- 16 . झंडा - ध्वजा ,ध्वज ,पताका ,वैजयंती
17 .तलवार - खडग ,कृपाण ,करवाल ,असि ,चन्द्रहास
18 .दिन - दिवस ,दिवा ,वार ,वासर ,अहन
19 . दुर्गा - जगदम्बा ,शक्ति ,अम्बा ,भवानी
20 . नदी - सरिता ,सलिला ,तरंगिणी ,सरि
-

अनेकार्थक शब्द

परिभाषा :- अनेक अर्थ प्रकट करने वाले शब्द अनेकार्थक कहलाते हैं | पृष्ठ संख्या 44

1 से 41 प्रथम सत्र

3 , 7 , 9 , 10 , 12 , 13 , 17 , 18 , 20 , 21 , 23 , 24 , 26 , 27 , 29 , 32 ,
36 , 38 , 40 , 41 |

- अग्र -आगे ,मुख्य ,नेता ,श्रेष्ठ
- अपेक्षा -तुलना ,आवश्यकता ,आशा
- अरुण -सिंदूर ,सूर्य ,लाल ,सूर्य का सारथि
- अलि -कौआ ,भौरा कोयल ,मदिरा
- अवस्था -आयु ,समय ,हालत ,दशा
- आराम -शांति ,विश्राम ,बाग
- कंचन -निर्मल ,धन -दौलत ,सोना
- कनक -सोना , , धतूरा,
- कर -किरण ,हाथ ,मालगुजारी ,हाथी की सूँड
- काल -समय ,मृत्यु ,यमराज
- खग - बाण ,वायु ,पक्षी ,देवता
- गुरु - भारी ,बड़ा ,शिक्षक,श्रेष्ठ

- ❑ चपला - लक्ष्मी ,बिजली ,चंचल ,स्री
- ❑ चीर - वस्त्र ,पट्टी ,रेखा ,चीरना
- ❑ जलज - शंख ,कमल ,मोती ,मछली
- ❑ तट -प्रदेश ,खेत ,किनारा
- ❑ तात -प्यारा ,मित्र ,पिता ,पूज्य ,बड़ा
- ❑ दल - समूह ,पक्ष ,पता ,सेना
- ❑ दुर्ग - कठिन ,किला ,एक ,असुर
- ❑ नग - सूर्य ,पहाड़ ,रत्न

विलोम शब्द

परिभाषा :- विपरीत अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं।

सिर्फ पृष्ठ 47

1 , 4 , 6 , 9 , 10 , 13 , 14 , 16 , 21 , 24 , 26 , 27 , 28 , 30 , 31 , 32 ,
33 , 36 , 37 , 39

- ❑ अंत - आदि
- ❑ अंधकार- प्रकाश
- ❑ आलसी - परिश्रमी
- ❑ आस्तिक- नास्तिक
- ❑ उन्नति - अवनति
- ❑ आश्रित - निराश्रित
- ❑ आर्द्र - शुष्क
- ❑ उग्र - शांत
- ❑ उत्कृष्ट - निकृष्ट

- ❑ अंतरंग - बहिरंग
- ❑ आधुनिक- प्राचीन
- ❑ आय - व्यय
- ❑ आयात - निर्यात
- ❑ अपमान- सम्मान
- ❑ अद्भुत - साधारण
- ❑ आशावादी- निराशावादी
- ❑ आरोह - अवरोह
- ❑ अनुकूल- प्रतिकूल
- ❑ अनिवार्य- ऐच्छिक
- ❑ अतिवृष्टि- अनावृष्टि

अपठित काव्यांश

व्याकरण पुस्तक से पृष्ठ 239 3. क्रमांक नोटबुक में करवाया जाएगा ।

हम जंग न होने देंगे

.....जंग न होने देंगे ।

हम जंग न होने देंगे !

विश्व शांति के हम साधक हैं ,जंग न होने देंगे !

कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी ,

खलियानों में नहीं मौन की फ़सल खिलेगी ।

आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा ,

एटम से नागासाकी फिर नहीं जलेगा ,

युद्ध विहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे ।

जंग न होने देंगे !

हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा ,

मुँह में शांति , बगल में बम , धोखे का फेरा ,

कफ़न बेचनेवालों से कह दो चिल्लाकर ,

दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा ,

कामयाब हों उनकी चालें , ढंग न होने देंगे ।

जंग न होने देंगे !

(क) कवि किस चीज का विरोधी है ?

(ख) कवि स्वयं को किसका साधक मानता है ?

(ग) 'नागासाकी' से क्या अभिप्राय है ?

(घ) 'युद्धविहीन ' में कौन -सा समास है ?

(ङ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।

.....

8 . यह सबसे कठिन समय नहीं

कवयित्री :- जया जादवानी

शब्दार्थ

- 1) झरती :- गिरती
- 2) थामना :- सहारा देना
- 3) गंतव्य :- जहाँ जाना हो
- 4) सदियाँ :- कई सौ सालों का समय
- 5) अन्तरिक्ष :- आकाश
- 6) तमाम :- बहुत से
प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "यह कठिन समय नहीं है ?" यह बताने के लिए कविता में कौन-कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- "यह कठिन समय नहीं है ?" – यह बताने के लिए कवयित्री ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं -

1. अभी भी चिड़िया चोंच में तिनका दबाए उड़ने को तैयार है क्योंकि वह नीड़ का निर्माण करना चाहती है ।
2. एक हाथ झड़ती हुई पत्ती को सहारा देने के लिए बैठा है ।
3. अभी भी एक रेलगाड़ी गंतव्य अर्थात् पहुँचने वाले स्थान तक जाती है ।
4. नानी की कथा का आखिरी हिस्सा बाकी है ।
5. अभी भी एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बचे हुए लोगों की खबर लाएगी ।
6. अभी भी कोई किसी को कहता है कि जल्दी आ जाओ , सूरज डूबने का समय हो चला है ।

प्रश्न 2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है ? वह तिनकों का क्या करती होगी ? लिखिए।

उत्तर :- चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि सूरज डूबने का समय हो चुका है उसके डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बनाना चाहती है । वह तिनके से अपने लिए घोंसला तैयार कर उसमें अपने बच्चों के साथ रहेगी । घोंसला उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है ।

प्रश्न 3. 'यह सबसे कठिन समय नहीं' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।

उत्तर :- 'यह सबसे कठिन समय नहीं' कविता में मनुष्य को निराशा त्यागने तथा जीवन के प्रति आशावादी बनने का सुझाव दिया गया है । कवयित्री वर्तमान को सबसे कठिन समय नहीं मानती हैं । इसके लिए वह चिड़िया को घोंसला बनाने की तैयारी करते हुए , गिरती पत्ती को थामने के लिए तैयार हाथ , स्टेशन पर भीड़ तथा गंतव्य तक जाती रेलगाड़ी अपने प्रियजन के लिए चिंतातुर लोग तथा अन्तरिक्ष की दुनिया से आती बस जो वहाँ बचे लोगों की कुशलता का समाचार लाती है , का उदाहरण देते हुए मनुष्य को निराशा से बचाने का प्रयास किया है।

प्रश्न 4. 'यह सबसे कठिन समय नहीं' कविता हमारे लिए क्या संदेश छोड़ जाती है ?

उत्तर :- 'यह सबसे कठिन समय नहीं' कविता ने मनुष्य को निराशा से बचने का संदेश दिया है । वर्तमान को कठिनतम समय न बताकर जीवन को आशावादी बनाने का प्रयास किया गया है । हमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखना चाहिए तथा मन की निराशा त्यागकर लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए ।

प्रश्न 5. बस कहाँ से और किनकी खबर लाएगी ?

उत्तर :- कविता में नानी जो कहानियाँ सुनाती हैं उसमें बस अन्तरिक्ष की दुनिया से आती है । वहाँ अन्तरिक्ष में बचे लोगों की कुशलता का समाचार लाती है ।

प्रश्न 6. 'घर न लौटने पर किस समय प्रियजन चिंतित हो जाते हैं' आखिर क्यों ?

उत्तर :- घर न लौटने पर सूर्य डूबने के समय या उसके बाद प्रियजन चिंतित हो जाते हैं । उनकी चिंता का कारण यह है कि सूर्य डूबने के बाद तो रात हो जाएगी । वे लौटकर न आने वाले से प्यार एवं अपनत्व का संबंध रखते हैं ।

प्रश्न 7. बूढ़ी नानी सदियों से कहानियाँ क्यों सुनाया करती होंगी ?

उत्तर :- बूढ़ी नानी द्वारा सदियों से कहानियाँ सुनाने के कई उद्देश्य हैं - पहला तो यह कि बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन होता है । वे शरारतें भूलकर शांत हो जाते हैं । दूसरा यह कि उन्हें जीवन की अनेक शिक्षाप्रद बातों का ज्ञान होता है ।

.....

.

9 . कबीर की साखियाँ

शब्दार्थ

- 1) ज्ञान :- जानकारी
- 2) म्यान :- तलवार रखने का कोष
- 3) दहुँ :- दस
- 4) दिसि :- दिशा
- 5) सुमिरन :- ईश्वर के नाम का जप
- 6) दुहेली :- दुख
- 7) वैरी :- दुश्मन

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'तलवार का महत्त्व होता है , म्यान का नहीं' - उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- 'तलवार का महत्त्व होता है , म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाहता है कि असली चीज़ की कद्र की जानी चाहिए । दिखावटी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं होता । इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान अथवा उसका मोल उसकी काबलियत के अनुसार तय होता है न कि कुल , जाति , धर्म आदि से । उसी प्रकार ईश्वर का भी वास्तविक ज्ञान जरूरी है । ढोंग-आडंबर तो म्यान के समान निरर्थक है । असली बह्म को पहचानो और उसी को स्वीकारो ।

प्रश्न 2. पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै , यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर :- कबीरदास जी इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए । इस साखी के द्वारा कबीर केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताते हैं । हमारा मन यदि चारों दिशाओं में भटक रहा है और हम राम-राम जप रहे हैं तो वह भक्ति सच्ची भक्ति नहीं है ।

प्रश्न 3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं ? पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- घास का अर्थ है पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु । कबीर अपने दोहे में उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो हमारे पैरों के तले होती है । कबीर के दोहे में 'घास' का

विशेष अर्थ है । यहाँ घास दबे-कुचले व्यक्तियों की प्रतीक है । कबीर के दोहे का संदेश यही है कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तुच्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए । हमें सबका सम्मान करना चाहिए ।

प्रश्न 4. कबीर जी किस तरह की भक्ति को सच्ची भक्ति नहीं मानते हैं ?

उत्तर :- कबीर जी उस भक्ति को सच्ची भक्ति नहीं मानते हैं , जब व्यक्ति हाथ में मनका घुमाता रहता है और मुँह से राम - राम उच्चारित तो करता है पर उसका मन एकाग्रचित्त होने के बजाए इधर - उधर भटकता रहता है ।

प्रश्न 5. मनुष्य आपा अपना खोता है , पर व्यवहार दूसरों का बदलता है , इस विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- जब कोई व्यक्ति अपने मन का घमंड त्यागता है तो उसका स्वभाव शांत , मन स्वच्छ तथा निर्मल हो जाता है , ऐसे में सभी उसके प्रति अपना व्यवहार बदलने को विवश हो जाते हैं । सभी उस पर दयाभाव बनाए रखते हैं ; इस प्रकार यह विरोधाभास स्पष्ट होता है ।

प्रश्न 6. आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है ? स्पष्ट करें ।

उत्तर :- आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है -

1. आपा और आत्मविश्वास - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास ।

2. आपा और उत्साह - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि उत्साह का अर्थ है किसी काम को करने का जोश ।

प्रश्न 7. कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है ?

उत्तर :- कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षात् ज्ञान दिया गया है । कबीर समाज में फैली कुरीतियों , जातीय भावनाओं और बाह्य आडंबरों को इस ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे ।

.....

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

प्रथम सत्र 1 से 50

पृष्ठ संख्या 59

3 , 6 , 10 , 12 , 13 , 14 , 20 , 22 , 28 , 31 , 32 , 33 , 35 , 36 , 38 , 42 ,
45 , 46 , 49 , 50 |

मुहावरे

परिभाषा :- जो वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं , उसे मुहावरा कहते हैं |

1 से 31 प्रथम सत्र

- 1) अपना उल्लू सीधा करना
- 2) अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना
- 3) आँखों का तारा
- 4) आग-बबूला होना
- 5) आसमान सिर पर उठाना
- 6) एक पंथ दो काज
- 7) कान खड़े होना
- 8) खरी - खोटी सुनना
- 9) गिरगिट की तरह रंग बदलना
- 10) गड़े मुर्दे उखाड़ना

- वाक्य प्रयोग विद्यार्थी स्वयं करेंगे |
-

अनौपचारिक पत्र

- 1) छोटी बहन को परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई - पत्र लिखिए |

अभ्यास हेतु

- 2) छोटी बहन / भाई को परीक्षा में असफल होने पर सांत्वना - पत्र लिखिए ।
- 3) अपनी सखी को अपने जन्मदिन पर आने का निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए ।

4. युगों का दौर

प्रश्न 1. 'भारत का नेपोलियन' किसे कहा जाता है और क्यों ?

उत्तर :- गुप्त साम्राज्य के वंशज समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है । समुद्रगुप्त का काल अत्यंत सुसंस्कृत शक्तिशाली और समृद्ध था । इस काल में साहित्य और कला के क्षेत्र में भारत ने बहुत उन्नति की ।

प्रश्न 2. कालिदास कौन थे ? भारतीय नाटक में उनकी प्रसिद्धि का क्या कारण है ?

उत्तर :- कालिदास संस्कृत भाषा के सबसे बड़े कवि और नाटककार हैं । उनके बारे में माना जाता है कि वह चन्द्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य के नौ रत्नों में एक थे । उनकी रचनाओं में जीवन के प्रति प्रेम और प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति आवेग मिलता है । 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' , 'मेघदूत' आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं ।

प्रश्न 3. संस्कृत भाषा अद्भुत रूप से समृद्ध भाषा है - ऐसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर :- संस्कृत भाषा अत्यंत विकसित तथा अनेक तरह से अलंकृत है । इस भाषा ने प्रसार होने , संपन्न होने तथा अलंकृत होने पर भी अपना मूल स्वरूप नहीं छोड़ा । यह अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी भी है।

प्रश्न 4. भास्कर द्वितीय का गणित के क्षेत्र में योगदान स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :- भास्कर द्वितीय का जन्म 1114 ई. में हुआ । उसने खगोलशास्त्र , बीजगणित और अंकगणित पर तीन ग्रंथों की रचना की । अंकगणित पर लिखी उनकी पुस्तक लीलावती सरल एवं स्पष्ट शैली में है । यह छोटी उम्र वालों के लिए बहुत उपयोगी है । कुछ संस्कृत विद्यालयों में आज भी पठन-पाठन हेतु इनकी शैली का प्रयोग किया जाता है ।

2. नयी समस्याएँ

प्रश्न 1. तैमूर के हमलों के बाद दिल्ली की क्या दशा हुई ?

उत्तर :- तैमूर के हमलों के बाद दिल्ली बुरी तरह तहस-नहस हो गई | उसे बनने में कई वर्ष लग गए | अब वह विशाल साम्राज्य की राजधानी जैसी नहीं रह गई थी | तैमूर के हमलों का प्रभाव चारों ओर दिखाई देता था |

प्रश्न 2. शिवाजी कौन थे ? उनका नाम भारतीय इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर :- शिवाजी का जन्म सन 1627 ई. में हुआ था | उनको मराठों का नायक कहा जाता है | वे कुशल छापामार नेता थे | उनकी सेना के घुड़सवार दूर - दूर छापामार कर शत्रुओं का मुकाबला करते थे | उन्होंने सूरत में अंग्रेजों की कोठियों को लूटा और मुगल साम्राज्य के क्षेत्रों पर 'चौथ' नमक कर लगाया | उन्होंने मराठों को संगठित कर दुर्जयशक्ति का रूप दिया |

प्रश्न 3. जयसिंह कौन था ? उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर :- जयसिंह राजपूताने में जयपुर का राजा था | वह बहादुर योद्धा तथा कुशल राजनीतिज्ञ था | वह गणितज्ञ , खगोल वैज्ञानिक , नगर निर्माण कराने वाला तथा इतिहास का जिज्ञासु था |

प्रश्न 4. बाबर कौन था ? उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर :- बाबर भारत में मुगल वंश का संस्थापक था | उसने 1526 ई. में दिल्ली की सल्तनत को जीता | उसका व्यक्तित्व आकर्षक था | वह कला और साहित्य का शौकीन था | अपने चार साल के शासन को उसने युद्ध तथा आगरा को राजधानी बनाने में लगाया |

.....